रिकॉर्ड :– तकदीर जगाकर आई हूँ... कानपुर ॐ पिताश्री 21/1/63
बच्चों को डायरैक्शन मिलते हैं कि अब अपने बाप अर्थात् शिवबाबा को याद करो। वह है ऊँच ते ऊँच बाप। उस बाप से जो सुख मिलता है सो और कोई बाप से नहीं मिल सकता। देखो, लाडले बच्चे, जन्म–जन्मांतर लौकिक बाप तो मिलते आते हैं द्वापर–कलियुग में। उनसे हद का वर्सा मिलता है; परन्तु वो लौकिक बाप वास्तव में कोई सुख नहीं देते हैं, वो तो बच्चों को दुख ही देते हैं। बाप बच्चों को शादी कराय, काम चिक्षा पर बिठाय देते हैं। यह भारतवासियों की ही बात है। दूसरे धर्म से कोई ताल्लुक नहीं। हर एक को अपने धर्म में सुख है। सभी से जास्ती सुख मिलते हैं भारतवासियों को स्वर्ग में, जिस धर्म को ही सभी भूल गए हैं। वह धर्म बहुत सुख देने वाला था। द्वापर से लेकर लौकिक माँ–बाप काम चिक्षा पर बिठाय, आदि–मध्य–अंत दुख को प्राप्त कराते हैं। फिर इस दुख से छुड़ाने वाला सदाशिव बाबा आते हैं। कहाँ–2 उनको म मालिक भी कहते हैं। म अर्थात् मेरा, मालिक रचता। वो है सबसे ऊँच बाप, जो इस समय आकर 21 जन्मों लिए सदा सुख का वर्सा देते हैं। जो वर्सा तुमको देवी–देवता धर्म में मात–पिता से मिलता है, वह सतयुग का सुख तुमको इसी समय ... शिवबाबा से मिलता है। ऐसे नहीं कि यहाँ वो माँ–बाप तुम बच्चों को सुख देते हैं। उन माँ–बाप और बच्चों को इस समय के पुरुषार्थ से ही सुख की प्राप्ति होती है। ऐसा बाप, जो इतना अथाह सुख देते हैं, उनकी गोद कितनी मोस्ट वैल्युएबुल है। भक्तिमार्ग में भी उनको ही याद करना चाहिए; परन्तु कोई को मालूम होता तो उनके पास चले जाते। दुख में मनुष्य चाहते तो हैं न कि हम भगवान के पास जावें। कोशिश करते हैं; परन्तु न जानने कारण कोई को मालूम नहीं। बाप आकर 21 जन्मों का वरदान सुख का देते हैं। न लौकिक बाप, न देवी–देवताएँ यह सुख दे सकते। देवताएँ तो यहाँ के पुरुषार्थ की प्रालब्ध हैं। तो इनकी गोद कितनी मोस्ट वैल्युएबुल है। भक्तिमार्ग में भी उस सुख को गाते हैं। वैकुण्ठ का कितना नाम बाला है! भक्तों को यह भी पता न है कि भगवान से हमें मिलना क्या है। फिर भी बाप तो ..... बाप से जो सुख मिलता है वो देवी–देवताओं की गोद (से) नहीं मिल सकता। इनका ही नाम गाया जाता है– तुम मात–पिता... अभी तुम बच्चे जान गए हो, सो भी जो पक्के ब्राह्मण हैं। सौतेलों(मातेलों) को जो माँ–बाप से सुख मिलता है, सो सौतेले को नहीं मिल सकता; क्योंकि वो मातेले बनकर पुरुषार्थ नहीं करते हैं। बाप आकर तुम बच्चों को काँटों से फूल बनाते हैं। (बा)प समझाते हैं– लाडले बच्चे! यह गोद जो तुमको मिलती है, इसके लिए भक्त भगवान को याद करते हैं। इस ज्ञान को देवी–देवताओं के पुजारी झट समझेंगे। वो जानते हैं ल०ना० का राज्य इस भारत में था। उन्हों की महिमा बहुत भारी है– सर्वगुण सम्पन्न.... अहिंसा परमोधर्म। वहाँ काम चिक्षा का नाम नहीं। काम चिक्षा पर चढ़ने से ही आत्मा जलती है। अभी यह सभी शरीर रा(ख) होने के हैं। बाप समझाते हैं– अब समय बहुत थोड़ा है। बाप को पहचान कर उनकी गोद तो ले लो। नम्बर वन मालिक है एक परमपिता प०। मोस्ट बिलवेड है। भक्तिमार्ग में एक को याद करना है; परन्तु ड्रामा अनुसार भक्ति को भी व्यभिचारी बनना ही है। तत्वों को, सागर पाणी को भी देवता समझ पूजते रहते हैं। अब पाणी थोड़े ही देवता हो सकता है। देवताओं के लिए तो अहिंसा गाते हैं। ब्रह्मा देवताय नमः, ... देवताय नमः, सागर देवताय नमः थोड़े ही कहेंगे। मनुष्यों को तो जो आता है सो कह देते हैं– सूर्य देवताय नमः, ... देवताय नमः। पाणी को भी देवता समझ लेते हैं। एक दत्तात्रेय गीता है ना! तो वो समझते हैं, सबसे गुण उठाना है। ये पाणी भी सेवा करते हैं, तो ज़रूर देवता ठहरे; परन्तु बाबा समझाते हैं देवताएँ कब (से)वा करते नहीं, वो तो प्रालब्ध भोगते हैं। उनको अगले जन्म के पुरुषार्थ का वर्सा मिलता है। बाकी आसुरी मनुष्यों को तो एक/दो को दुख देना ही है। ये सूर्य–चाँद–सितारे आदि कोई सेवा थोड़े ही करते हैं। सेवा करने वाला एक बाबा। कहते हैं– मैं आकर कल्प2 तुम बच्चों को वर्सा देता हूँ। यहाँ से तुमको सुख मिलता है। देवताएँ कब एक/दो पर काम–कटारी नहीं चलाते। इन्हों को ये किसने सिखलाया? पास्ट जन्म (में) इन्हों की आत्मा को प० ने बैठ सहजयोग सिखलाया, जिससे सो देवता बने। अब तुम तकदीर बनाकर

आई ..... हम नर से ना० बने। हम सो देवी–देवता फिर से ..... हैं। तुम्हारी तकदीर, उन गीता–पाठशालाओं में तकदीर थोड़े ही बनाकर जाते हैं। तकदीर तो यहाँ मिलती है ना! बाकी जो भी वेद–शास्त्र आदि हैं, वो भी ड्रामा में नूँध हैं। भक्तिमार्ग की सामग्री से फिर भी पास करना होगा। शास्त्र आदि पढ़ते आवेंगे। बाकी ऐसे नहीं, शास्त्र आदि पढ़ने से तुम मुक्ति–जीवनमुक्ति धाम जा सकती हो। फिर बाकी ..... क्या मिला? गीता आदि तो जन्म–जन्मांतर पढ़ी। फिर पढ़ने (से) क्या हुआ? ताकत कहाँ से आय? कहाँ भगवान के मुख से निकले हुए महावाक्य .... कि ये ज्ञान राजाओं का राजा बनाने वाला है, कहाँ वो शास्त्र! सो तो मनुष्यों ने दुक्के(तुक्के) पर बनाए हैं। ये भी नूँध है। वेद–शास्त्र आदि और भी तुम पढ़ेंगे। भक्तिमार्ग में इनका महत्व है। ये हैं भक्ति की सामग्री, ज्ञान की नहीं। कितनी उल्टी दंत–कथाएँ बनाय दी हैं। दिखाते हैं– सीताओं को रावण ले गया। वास्तव में सीताएँ तो सब हैं। सब इस समय शोक वाटिका में हैं। तुम सीताओं को रावण माया ने शोक वाटिका में रख दिया है। हर बात में शोक–फिक्र ज़रूर होता है। अब तुम बच्चों को फिक्र से फारिग कर रहे हैं। सतयुग में कोई फिक्र नहीं, वहाँ तो सुख ही सुख है; परन्तु भारतवासी अपने धर्म को भूलने कारण धर्म–कर्म भ्रष्ट बन पड़े हैं। आदि सनातन तो देवता धर्म था ना! इन्हों के चित्र भी हैं। क्या ये हिन्दुओं के चित्र हैं? बाबा कहते हैं– कितने बेसमझ, पत्थरबुद्धि बन पड़े हैं! मैं फिर पारसबुद्धि बनाता हूँ। माया के राज्य में मनुष्य जो कर्म करते हैं, वो विकर्म हो जाते हैं। सतयुग में कर्म, अकर्म होते हैं। बाकी शांतिधाम में कर्म होते ही नहीं। वहाँ तो अशरीरी हैं। सतयुग में तुम सदा सुखी रहेंगे। वो है ही वाइसलेस वर्ल्ड। हेविनली गॉड फादर अब हेविन स्थापन कर रहे हैं। तुम ब(च्चों) को अब उनकी गोद मिल रही है। हम(रे) गोद में आने से तुम कितना उड़ते हो। उनको कहा जाता है– त्वमेव माता..... यह ईश्वरीय गोद अथाह सुख देती है। रास लीला, बाल लीला जो होती है, वो सभी ध्यान की बात है। दिखाते हैं– कुन्ती ने ज्ञान सूर्य का आवाहन किया। उस सूर्य की तो बात ही नहीं। कुन्ती .... कन्या। कन्या ने ज्ञान सूर्य का आवाहन किया। ज्ञान सूर्य को पति भी कहते हैं। यह है सा० की बात। ....परन्तु इ(स)से क्या (काम)! पहले तो यह बातें समझनी हैं– तुम (सो) देवता थे, सो फिर क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र बन, फिर अब ब्राह्मण बन, ब्राह्मण से देवता बनते हो। जो ब्रह्मा मुखवंशावली बनेंगे सो देवता बनेंगे। यह सारा फूलों का बगीचा है; उनमें भी कोई गुलाब के, कोई मोतियाँ आदि नम्बरवार हैं। माया का तूफान कलियों को झट मुरझाय देता है। कोई को तो एकदम खुशी का पारा चढ़ा हुआ है, कोई तो यहाँ से बाहर जाते और खत्म हो जाते। बगीचा है, उसमें फूल–कलियाँ नम्बरवार बनेंगे। पुखराज पुरी(परी), नीलम पुरी(परी) भी तुम हो। अभी ज्ञान से परिस्तान के तुम मालिक बनते हो। इस सभा में कोई विकारी आ नहीं सकता। कोई विकार में जाकर सुनाते नहीं है, छुपा देते हैं। समझते हैं, हमारा किसको पता नहीं; परन्तु वो बहुत सज़ा के भागी बन पड़ते हैं। धर्मराज बाबा सा० कराय देते हैं, कहते हैं– तुम गंदा शैतान बन फिर सभा में आए थे। अभी खाओ सज़ा। बच्चों के लिए खास–स्पेशल ट्रिब्यूनल बैठती है; क्योंकि बच्चों पर ही बाबा मेहनत करते हैं ना! बाबा कहते हैं– मुझे न जान कर, जो गाली देते हैं, उन पर भी कोई पाप नहीं लगता। जान कर अगर गुस्ताखी करते या ट्रेटर बनते, तो उनके लिए बहुत कड़ी सज़ा है। बहुत ही ट्रेटर बन ग्लानि करने लग पड़ते। नथिंग न्यू। अपकारी पर फिर भी उपकार करना है। बाप कहे, तुम कितने अपकारी हो– मुझे सर्वव्यापी कर दिया है। देवताओं की इतनी ग्लानि कर दी है। कितना अपकार किया है– मेरा और मेरी संतान देवी–देवताओं का! मैं फिर सभी का उपकार करने आया हूँ। भल कोई अपकार करे, उन पर भी उपकार करना चाहिए। तुम्हारे बिगर कौन स्वर्ग का मालिक बनावे! उपकार करना तुम ब्राह्मणों का काम है। न करेंगे तो फिर सज़ा के लायक बनेंगे। इस समय ही यह गोद मिल सकती है। इस गोद का कितना प्रभाव है! कितना भक्त याद करते हैं। मैं तो यह नॉलेज देकर फिर गुम हो जाता हूँ। सब कुछ करके बच्चों को सुख देकर फिर मैं छुप जाता हूँ। तो बाप समझाते हैं– इस समय सभी दुखी हैं। प्रेसिडेंट, प्राइम मिनिस्टर को भी सुख से नींद थोड़े ही आती। बड़ा कहावना बड़ा दुख पावना। बड़ों को फिक्र रहता है। राजाओं की राजाई भी छीन ली है। यह प्रजा का राज्य भी ड्रामा में नूँध है। बाप कहते हैं– मैं भी इस बेहद ड्रामा के बंधन में बाँधा हुआ हूँ। मुझे भी पार्ट मिला हुआ है। भक्तिमार्ग में भी पार्ट बजाता हूँ। इन बातों को भी समझना है। अच्छा। ॐ